ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

# हिंदी ऑनलाइन कक्षा

## कक्षा - नवी

**विषय – हिंदी**
**पाठ : ४**
**पाठ का नाम : एवरेस्ट: मेरी शिखर यात्रा**
**PPT-1**



Website: www.odmegroup.org
Email: info@odmps.org
Toll Free: 1800 120 2316
Sishu Vihar, Infocity Road, Patia, Bhubaneswar- 751024

# लेखिका-परिचय

**बचेंद्री पाल** का जन्म उत्तरांचल के चमोली ज़िले के बंपा गाँव में २४ मई १९५४ को हुआ। पिता पढ़ाई का खर्च नहीं उठा सकते थे। अत: बचेंद्री को आठवीं से आगे की पढ़ाई का खर्च सिलाई-कढ़ाई करके जुटाना पड़ा। विषम परिस्थितियों के बावज़ूद बचेंद्री ने संस्कृत में एम.ए. और फिर बी. एड. की शिक्षा हासिल की। बचेंद्री को पहाड़ों पर चढ़ने शौक़ बचपन से था। इनका परिवार कभी पहाड़ की ऊँचाई पर तो कभी तराई में बसे एक गाँव में बिताता था। जब वे तराई वाले गाँव में आ जाते तो बचेंद्री को स्कूल जाने के लिए पाँच-छह मील की चढ़ाई चढ़नी और उतरनी पड़ती थी। पढ़ाई पूरी करके वह एवरेस्ट अभियान - दल में शामिल हो गईं। ट्रेनिंग के दौरान वह ७५०० मीटर ऊँची मान चोटी पर सफलतापूर्वक चढ़ीं। कई महीनों के अभ्यास के बाद आखिर वह दिन आ ही गया , जब उन्होंने एवरेस्ट विजय के लिए प्रयाण किया।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

# पाठ प्रवेश

इस पाठ में बचेंद्री पाल अपनी एवरेस्ट पर की गई चढ़ाई और एवरेस्ट पर चढ़ने वाली प्रथम भारतीय महिला बनने के सफर की आत्मकथा को हम सभी के साथ साँझा कर रही हैं। बचेंद्री पाल को एवरेस्ट पर चढ़ाई के दौरान क्या-क्या समस्यायें हुई और उन्होंने तथा उनके साथियों ने किस तरह उन समस्याओं का सामना किया बचेंद्री पाल उन सभी यादों को इस पाठ के माध्यम से सभी तक पहुँचाना चाहती हैं।

## संबंधित प्रश्न –

१. एवरेस्ट पर चढ़ने वाली प्रथम महिला का नाम क्या था?
२. बचेंद्री पाल को चढ़ाई करते समय कौन -कौन सी समस्याएँ आई?
३. उनकी यादों से क्या सीख मिलती है?

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

**सामान्य उद्देश्य -** साहस , हमदर्द, आस्थावान तथा विनम्रता ही सफलता का राज है।

**विशिष्ट उद्देश्य -** सहयोग देनेवाले व मार्गदर्शक करने वाले लोग ही चुनौतियों का सामना करते हुए ऊँचाई को छूने की कोशिश करते हैं और सफलता को प्राप्त करते हैं।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

# पाठ का सार

लेखिका बचेंद्री पाल एवरेस्ट विजय के जिस अभियान दल में एक सदस्य थीं, लेखिका उस अभियान दल के साथ 7 मार्च, 1984 को दिल्ली से काठमांडू के लिए हवाई जहाज़ से गयी। एक मजबूत अग्रिम दल हमारे पहुँचने से पहले 'बेस कैम्प' पहुँच गया जो उस उबड़-खाबड़ हिमपात के रास्ते को साफ कर सके, लेखिका एक स्थान का जिक्र किया जिसका नाम नमचे बाज़ार है और वहाँ से एवरेस्ट की प्राकृतिक छटा का बहुत सुंदर निरीक्षण किया जा सकता है। लेखिका ने बहुत भारी बड़ा सा बर्फ का फूल (प्लूम) देखा जो उन्हें आश्चर्य में डाल दिया। लेखिका के अनुसार वह बर्फ़ का फूल 10 कि.मी. तक लंबा हो सकता था । इस अभियान दल के सदस्य पैरिच नामक स्थान पर 26 मार्च को पहुँचे, जहाँ से आरोहियों और काफ़िलों के दल पर प्राकृतिक आपदा मँडराने लगी।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

यह संयोग की बात था कि 26 मार्च को अग्रिम दल में शामिल प्रेमचंद पैरिच लौट आए थे। उनसे खबर मिली कि 6000 मी. की ऊँचाई पर कैंप-1 तक जाने का रास्ता पुरी तरह से साफ़ कर दिया गया है। दूसरे-तीसरे दिन पार कर चौथे दिन दल के सदस्य अंगदोरजी, गगन बिस्सा और लोपसांग साउथ कोल पहुँच गए। 29 अप्रैल को 7900 मीटर की ऊँचाई पर उन लोगों ने कैंप-4 लगाया। लेखिका 15-16 मई, 1984 को बुद्ध पूर्णिमा के दिन ल्होत्से की बर्फीली सीधी ढलान पर लगाए गए सुंदर रंग के नाइलोन के बने टेंट के कैंप-3 में थी। कैंप में 10 और व्यक्ति थे। साउथ कोल कैंप पहुँचने पर लेखिका ने अपनी महत्वपूर्ण चढ़ाई की तैयारी शुरू कर दी। सारी तैयारियों के बीच अभियान चल रही थी , पर्वतारोही दल आगे बढ़ता रहा और 23 मई, 1984 दोपहर के एक बजकर सात मिनट पर लेखिका एवरेस्ट की चोटी पर पहुँच गई।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

# THANKING YOU

# ODM EDUCATIONAL GROUP

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow